फुलवारी बाल-गीतों की

फुलवारी बाल-गीतों की

(बाल काव्य-संग्रह)

बिमला रावर

माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.)

☐ ISBN-81-8212-080-2 ☐

फुलवारी बाल-गीतों की

(बाल काव्य-संग्रह)

© : बिमला रावर

प्रकाशक

माण्डवी प्रकाशन

88-रोगनग्रान, देहली गेट, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.) 201001

दूरभाष

9810077830

ईमेल

mandvi.prakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण

अगस्त– 2012

मुद्रक

नूतन ऑफ़सेट प्रिन्टर्स, ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.)

मूल्य : 150/-

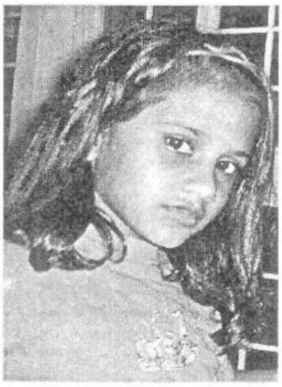 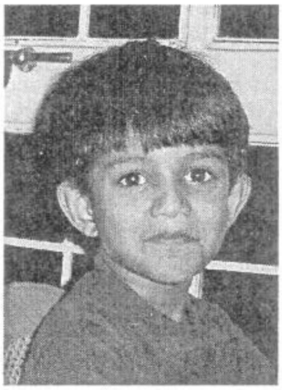

समर्पण

अपनी बाल कविताओं का
यह प्रथम संग्रह मैं अपनी
प्रिय पौत्री वल्लरी
और
प्रिय पौत्र आर्यमान को
सस्नेह समर्पित करती हूँ

-बिमला रावर

प्रकाशकीय

साहित्य समाज का दर्पण तो होता ही है, साथ ही वह उसका पथ–प्रदर्शक तथा शिक्षक भी होता है। अच्छा साहित्य जहाँ सामाजिक स्तर पर मानवता के समक्ष आदर्श स्थितियाँ प्रस्तुत करता है, वहीं वैयक्तिक स्तर पर जीने की कला भी सिखाता है। जीने की कला तथा आदर्श सामाजिक स्थितियों की जानकारी सबसे अधिक आवश्यक है उनके लिए जो देश के भावी नागरिक हैं और जिन्हें विश्वबंधुत्व के उच्चादर्श की स्थापना के पथ पर अग्रसर होना है। अतः किसी भी देश की भाषा में श्रेष्ठ एवं उपयोगी बाल–साहित्य का होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि उसी साहित्य से मनोरंजक एवं गरिमामय–भँगिमाओं से सजा–सँवरा मार्गदर्शन प्राप्त करके उसके बाल–पाठक अपने जीवन को सफल, सरस तथा उपयोगी बना सकते हैं।

दुर्भाग्य से हिन्दी में बाल–साहित्य और विशेष रूप से बाल–कविताओं/गीतों की बहुत कमी है। बाल कविताएँ–गीत दो प्रकार की होती हैं। एक तो वे जिन्हें बच्चे झूम–झूमकर गाते

हैं, और दूसरी वे जो उनके मनोरंजन और ज्ञानवर्धन के लिए लिखी जाती हैं। इस दूसरे प्रकार की कविताओं में इस बात की बहुत संभावना रहती है कि वे उपदेशात्मकता की शिकार हो जायें और अपनी सहज रोचकता खो बैठें। श्रीमती बिमला रावर की कविताएँ दूसरे प्रकार की होती हुई भी उपदेशात्मकता से कहीं भी बोझिल तथा अरुचिकर नहीं हुईं। यही इस बाल कविता संग्रह की सबसे बड़ी ख़ासियत भी है।

बिमला रावर जी के अनेक बाल–गीत बड़े रोचक एवं ग्राह्य ढंग से बच्चों को अच्छा मानव बनने की सीख देती हैं और उनमें अपने देश के प्रति, परिवार के प्रति, आपसी सम्बन्धों और प्रकृति के प्रति प्रेम और भक्ति की भावना जगाती हैं।

संग्रह में कई बाल–गीत राष्ट्रवादिता, भारत की अखण्डता, जीवन मूल्यों में विश्वास, आत्मनिर्भरता, कर्मशीलता, वैज्ञानिक दृष्टिपरक वैचारिकता और पारम्परिक गतिविधियों को सहज रूप से बालमन में स्थापित करती हैं।

यह बिमला रावर जी के अनुभवी लेखन की विशेषता है कि सभी गीत सीधी, सरल, बोधगम्य भाषा में कथ्य को मनोरंजक ढंग से सम्प्रेषित करते हैं और सफ़लता का आंकलन बालक–बालिकाओं और प्रबुद्ध पाठकों पर छोड़ते हैं।

आशा ही नहीं अपितु विश्वास है पाठक वृन्द हमारी बात से इत्तेफाक रखेंगे। माण्डवी प्रकाशन की यह कृति आपको कैसी लगी अपनी निष्पक्ष प्रतिक्रिया और राय से अवगत करायेंगे यह भी विश्वास है।

मनु भारद्वाज 'मनु'
सम्पादक–निदेशक
(माण्डवी प्रकाशन)
Gmail : editormandviprakashan@gmail.com

फुलवारी बाल-गीतों की

(बाल काव्य-संग्रह)

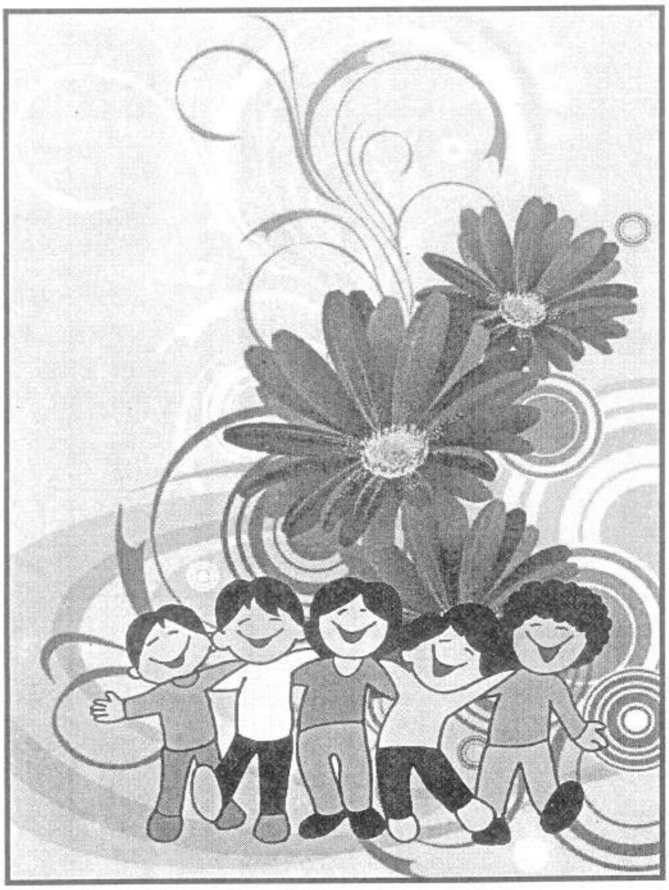

बिमला रावर

अनुक्रम

1.	गणपति वंदना	13	31.	अखबार	43
2.	प्रार्थना	14	32.	पढ़-पढ़-पढ़	44
3.	सरस्वती वंदना	15	33.	पूजा घर	45
4.	राखी आई	16	34.	मेरी पुस्तक	46
5.	राखी के धागे	17	35.	अम्मा का रसोईघर	47
6.	भैया बहना	18	36.	मेरा घर मेरा मन्दिर	48
7.	नया घोसला	19	37.	बात बड़ों की	49
8.	कोयल का स्वर	20	38.	चंदा लादो	50
9.	छोटी मोटी गुड़िया	21	39.	मेरा बस्ता	51
10.	मच्छर आया	22	40.	चन्दा मामा की बारात	52
11.	नाचे लट्टू	23	41.	मैं गुलाब हूँ	53
12.	कुछ आम-आम	24	42.	मेरी अम्मा	54
13.	नई कहानी	25	43.	अक्षरों के दीप	55
14.	बंदर मामा गये दिल्ली	26	44.	विद्यालय	56
15.	हम साहस के पुतले	27	45.	सूरज दादा का आँगन	57
16.	केला और मेला	28	46.	याद करें सब लोग हमें	58
17.	काली-काली कोयल रानी	29	47.	मस्तक पर है मुकुट...	59
18.	बच्चों का वादा	30	48.	प्यारी बरखा रानी	60
19.	मोटू के जूते	31	49.	ऐसा संयोग	61
20.	माँ की साड़ी	32	50.	मधुर सपना	62
21.	एक शपथ	33	51.	ईश्वर का नामकरण	63
22.	बूँद-बूँद पानी	34	52.	उठो वीर	64
23.	कर्मपथ	35	53.	सपने सुनहरे	65
24.	गुड़िया का जन्मदिन	36	54.	मुन्नी की चुन्नी	66
25.	मेरे भैया	37	55.	कड़क दिसम्बर	67
26.	भारत माता की बेटी	38	56.	मेरी अम्मी प्यारी	68
27.	मुझी से म्याऊँ	39	57.	दूसरों का दोष	69
28.	शुभ दीपावली	40	58.	आज़ादी का त्यौहार	70
29.	प्यारा गणतंत्र	41	59.	दिनकर	71
30.	बढ़ते रहो	42	60.	नवप्रकाश	72

61. क्यों हमें तुम बाँधते हो	73
62. तारे	74
63. मेरी गुड़िया	75
64. मेरी पाठशाला	76
65. आते बादल	77
66. मेरी मुनिया	78
67. कलम बड़ी तलवार से	79
68. नन्ही गुड़िया	80
69. पानी	81
70. खिलौने वाला	82
71. सैनिक के चरणों में	83
72. जागो मोहन प्यारे	84
73. सोना मोना	85
74. माँ की किरण परी	86
75. मित्र हैं किताबें	87
76. चिड़िया के बच्चे	88
77. माँ के हाथों की रोटी	89
78. बादलों के घड़े	90
79. चूँ-चूँ भाई	91
80. उड़ी पतंग	92
81. मेले में बंदर मामा	93
82. बोलियाँ	94
83 रखवारी आँखें	95
84 जंगल का राजा	96
85 दो तारे	97
86 तारे-तारे	98
87 कुहू की भाषा	99
88 कदम रुक न पाये	100
89 चंद्रलोक की परी रानी	101
90 न उड़ जाना	102
91. छोटा सा बागीचा	103
92. धरती बने निराली	104
93. शीत लहर की करोविदाई	105
94. खून का रिश्ता	106
95. मकर संक्रान्ति का त्यौहार	107
96. नानी आई	109
97. नये युग की सर्जना	111
98. शहीदों की खातिर	113
99. छोटा राजकुमार	114
100. मेरी छोटी सा बगिया	115
102. चमक रहे सूरज दादा	116
103. रानी गई जंगल	117
104. विज्ञान की बातें	119
105. हमें न बांटों	121
106. अपना घर	122
107. मानव शक्ति	123
108. छोटी सा गुलाब	125
109. दादी आई	126
110. रंग रंगीली होली	127
111. सतरंगा गोला	128

गणपति वंदना

जय गणपति जय-जय-गणनायक
बुद्धिदान दो बुद्धि विनायक
ज्ञान का वरदान दे दो
मान दो सम्मान दे दो
स्नेह सारी सृष्टि का दो
प्रेम की तुम वृष्टि कर दो
बुद्धि के दाता तुम्हीं हो
पतित के त्राता तुम्हीं हो
हम खड़े करबद्ध सम्मुख
कृपा करो जग के सुख दायक
जय जय गणपति जय-जय गणनायक
बुद्धिदान दो बुद्धि विनायक

✷

प्रार्थना

मेरे होठों पे अब आई है दुआ ये भगवन
ज्योति सी जलती रहूँ ऐसा मेरा हो जीवन
जल के मैं दूर करूँ तम जो घिरा है सब ओर
मैं जलूँ और करूँ जल के उजाला सब ओर
मैं अँधेरों को मिटा दूँ मैं हटा दूँ तम को
अच्छे रस्ते पे चलें एक ये वर दे हमको
न कोई दीन दुखी होवे न बीमार कोई
न निराशा के अँधेरे में तजे संसार कोई
मैं झुका सिर तेरे दर पर यही माँगूं तुझसे
भूल से भी न मिले दर्द किसी को मुझसे
सब का कल्याण हो सब खुश रहें आबाद रहें
मेरा भारत रहती दुनियाँ तलक आज़ाद रहे
प्रेम से रहते रहें मेरे ये भारत के जन गण
न लड़े कोई भी आपस में न होवे अनबन
मेरे होठों पे अब आई है दुआ ये भगवन
ज्योति सी जलती रहूँ ऐसा मेरा हो जीवन

✷

सरस्वती वन्दना

जय मात सरस्वती दया करो
कर्त्तव्य मार्ग पर चलें सदा
अपने पथ से विचलित न हों
हम सत्य मार्ग पर चलें सदा
हम बालक तेरे हैं माता
युग-युग से तुमसे है नाता
तेरी आशीष मिले हमको
हम ज्ञान मार्ग पर बढ़ें सदा
दे कला ज्ञान-विज्ञान हमें
दे दे विद्या का दान हमें
ऐसे शुभ कर्म हमारे हों
हम तेरी सेवा करें सदा
हमको बस लगन तुम्हारी हो
सिर पर आशीष तुम्हारी हो
ऐसा वरदान तुम्हारा हो
जीवन पथ में हो सफल सदा

✷

राखी आई

मेरा सारा प्यार भरा है
राखी के धागों में भाई

मेरा भैया सबसे अच्छा
आज बता दूँ तुमको भाई

भैया को प्यारी है बहना
बहना को प्यारा है भाई

दोनों इक दूजे के रक्षक
यही बताने राखी आई

मेरे भैया की कलाई में
कितनी सुन्दर लगती राखी

तार-तार में बंधे प्यार को
सदा बनाये रखती राखी

आज करेंगे हम ये वादा
कभी करेंगे नहीं लड़ाई

मेरा सारा प्यार भरा है
राखी के धागों में भाई

✷

राखी के धागे

मेरे भैया के हाथों में
कितनी सुन्दर लगती राखी

रक्षा भाई करे बहन की
उसको समझाती है राखी

मैं भैया को तिलक लगाकर
उसे बाँधती हूँ राखी

बड़े प्यार से देखें भैया
जब उसको बाधूँ राखी

जितना प्यारा भैया मेरा
उतना प्यारा यह त्यौहार

राखी के कच्चे धागों में
बसता कितना पक्का प्यार

✷

भैया बहना

भैया को प्यारी है बहना
बहना को प्यारा है भाई

भाई बहन की खुशियाँ लेकर
राखी आई, राखी आई

बहना तिलक लगाए भाई को
और खिलाए उसे मिठाई

बड़े प्यार से बाँधे राखी
भैया की खिल जाये कलाई

मन से वचन भरे रक्षा का
और भेंट भी देता भाई

बहन भाई पर वारी जाये
जिये सौ बरस मेरा भाई

देखो कितनी खुशियाँ लेकर
राखी आई, राखी आई

नया घौसला

कल रात ज़ोर की हवा चली
उड़ गया घोंसला चिड़िया का

तिनका-तिनका जोड़ा था तब
था बना घोंसला चिड़िया का

अंडे टूटे बच्चे छूटे
रह गई अकेली यह चिड़िया

घर तो उसका सब टूट गया
अब कहाँ रहेगी यह चिड़िया

चूँ-चूँ-चूँ-चूँ रोती जाती
कोई न उसकी बात सुने

चूँ-चूँ की भाषा है मुश्किल
कोई उसको कैसे समझे

प्यारी चिड़िया मत घबराओ
समझाये चिरौटा चिड़िया को

इक नये घोंसले के अन्दर
रखूँगा अपनी चिड़िया को

✷

कोयल का स्वर

बैठ आम की डाली पर जब
कोयल गाती गाना
थिरक-थिरक कर बौर नाचते
सुन-सुन मीठा गाना
धीरे-धीरे नाच-नाचकर
बन जाते वो आम
कोयल के मीठे गाने से
बनते मीठे आम
कुहू-कुहू का गाना सुनना
जब भी चाहे आम
कोयल उड़कर आ जाती है
छोड़ के सारे काम
सिर्फ़ आम के पेड़ को कोयल
अपना गीत सुनाये
आम सा मीठा कोयल का स्वर
सबके मन को भाये
उसका मीठा-मीठा स्वर
जब घुल कर आम में जाये
आम के अन्दर का सारा रस
तब मीठा हो जाये ।

✷

छोटी-मोटी गुड़िया

एक हमारे घर में है छोटी सी गुड़िया
सब उसको कहते हैं छोटी मोटी गुड़िया
कभी है हँसती कभी है रोती
कभी तमाशा करती
कोई समझ न पाए किस भाषा में बातें करती
दूध की बोतल लगा के मुँह में
टुकुर-टुकुर तकती है
मुँह से नहीं बोलती आँखों से बातें करती है
चलता रहता रात और दिन
उसका यह रोना धोना
बिना दाँत के मुँह से हँसना और मज़े से सोना
सब कहते ये ज़रा सी गुड़िया
है आफत की पुड़िया
एक हमारे घर में है छोटी सी गुड़िया

✷

मच्छर आया

मच्छर आया मच्छर आया
गुन-गुन का है राग सुनाया
आज़ादी से घूम रहा
सारे घर में झूम रहा
चूस रहा है सबका खून
मचा रहा घर भर में धूम
सबके मुँह में ये ही अक्षर
हाय मच्छर हाय मच्छर
कैसे इसे भगायें हम
केरोसीन पिलायें हम
धुआँ इसे दिखायें हम
सिर से पाँव तलक है खाया
मच्छर आया, मच्छर आया ।

✷

नाचे लट्टू

कभी फर्श से कभी दीवारों से टकराकर
नाच रहा है मेरा लट्टू सर-सर-सर-सर
कभी इधर और कभी उधर गिरता उठता है
नाच रहा है बड़ी शान से एक टाँग पर
सोनू-मोनू बंटी बबली सभी नचाते
लट्टू जी भी नाच-नाच कर उन्हें नचाते
मैं भी सोच रही मन में लट्टू कितना अच्छा है
उसे नाचते देख खुशी से हँसता हर बच्चा है
नाचे लटटू नाचे बच्चे मची हुई है धूम
कहते सारे बच्चे लट्टू घूम-घूम-घूम

✷

कुछ आम आम

कुछ आम आम
कुछ खास आम
ऐसे मिलते हैं आम यहाँ
है तरह तरह के आम यहाँ
गर नाम गिनना शुरू करूँ
सारी किताब भर जायेगी
इनका गुणगान करूँ कितना
मेरी जिह्वा थक जायेगी
कुछ मीठे हैं कुछ खट्टे हैं
कुछ फीके कुछ खठमिट्ठे हैं
कितनी चीज़ें बनतीं इनसे
आमों के हैं कितने किस्से
राजा और रंक सभी खाते
खाकर लगायें सब चटखारे
कुछ महँगे हैं कुछ हैं सस्ते
सब के हैं अपने दाम यहाँ
कुछ आम-आम
कुछ खास आम
ऐसे मिलते हैं आम यहाँ
अब थोड़ी मेहनत आप करें
आमों की महिमा पता करें
आमों की जाति
आमों के नाम
क्या-क्या बनता है पता करें
यह भी बतलायें आप हमें
पाये जाते हैं कहाँ-कहाँ
कुछ आम-आम
कुछ खास आम
ऐसे मिलते हैं आम यहाँ ।

✷

नई कहानी

एक था राजा
एक थी रानी
हमने सुनी कहानी
कहाँ है राजा
कहाँ थी रानी
हमें दिखाओ नानी
जब तक न देखें राजा को
हम न सुनें कहानी
हमें सुनाओ नई कहानी
ये तो हुई पुरानी
नायक बदले अब कथाओं के
नये हैं नायक आये
कोई खेले कम्प्यूटर से
कोई जहाज़ उड़ाये
किया जिन्होंने अपने बस में
धूप हवा और पानी
उन वीरों की बुद्धिमानों की
सुननी मुझे कहानी ।

बंदर मामा गये दिल्ली

चूहा आया बंदर आया
आई मोटी बिल्ली
कुत्ता मुर्गा और कबूतर
मिलकर पहुँचे दिल्ली
सारे मिलकर गये घूमने
गये देखने मेला
मेले में बंदर मामा ने
जमकर किया झमेला
देखी एक बंदरिया
मामा उसके पीछे भागे
पीछे-पीछे भागे मामा
और बंदरिया आगे
नाच बंदरिया ने मामा को
खूब खिलाया खेल
जा थाने में करी शिक़ायत
मामा पहुँचे जेल
लौट अकेले घर को आये
कुत्ता मुर्गा बिल्ली
चूहा और कबूतर बोले
अब न जायें दिल्ली

✷

हम साहस के पुतले

तुम आशाओं की डोर पकड़कर
बढ़े चलो आगे पथ पर
न बाधाओं से घबराना
चाहे हर पथ पर टकरायें
भर शक्ति हृदय में मुस्काना
पथ में कितने काँटे आयें
जब संघर्षों की अग्नि में
तप कर सोना बन जाओगे
उत्कर्ष प्राप्ति का लक्ष्य तभी
अपना पूरा कर पाओगे
नैराश्य शत्रु है मानव का
बन्धु निराश न तुम होना
वैराग्य नहीं लेना तुमको
न बन निर्बल तुमको रोना
विस्तृत आकाश तुम्हें छूना
बौना बन कर न तुम्हें रहना
उतुंग हिमालय श्रृंग नहीं
तुम चंदा से जाकर कहना
हम बेटे भारत माता के
हम तो हैं साहस के पुतले
हम आगे बढ़ते जायेंगे
आशाओं की डोरी पकड़े ।

✷

केला और मेला

चुन्नू मुन्नू बाबू बनकर
गए देखने मेला
बैठे पापा के कंधे पर
हाथों में ले केला
दोनों ने खाया केला
और छिल्का फेंका सड़क पर
दो बेचारे भाग्य के मारे
उन पर गिरे रपट कर
शोर मचा तो चुन्नू मुन्नू
लगे ज़ोर से रोने
सहम गये ऐसे
जैसे कोई हों दो मृग छौने कोई
लौट सवारी घर को आई
माँ को सारी बात बताई
रो-रोकर बोला चुन्नू
अब नहीं जायेंगे मेला
और ज़ोर से रोया मुन्नू
नहीं खायेंगे केला
माँ ने कहा 'नहीं बच्चों
घबराओ मत मेले से
छिल्के कूड़ेदान में फेंको
डरो न तुम केले से ।'

काली-काली कोयल रानी

काली-काली कोयल रानी
क्यों तुम गाना गातीं
कुहू-कुहू की आवाज़ों से
किसको यहाँ बुलातीं
पके आम की डाली पर तुम
बैठी झूल रही हो
मीठे-मीठे आम खा रहीं
कू-कू कूक रही हो
अपनी मीठी बोली से तुम
किसको रोज़ रिझातीं
या फिर अपने किसी मित्र को
दे आवाज़ खिझातीं ।

✷

बच्चों का वादा

दीदी से कल हुई लड़ाई
मैंने बातें बड़ी बनाई
माँ ने मुझे बहुत समझाया
बेटा कभी बुरा मत बोलो
जीवन का यह नियम बना लो
पहले तोलो फिर कुछ बोलो
विद्यालय में रामू-श्यामू
जब-तब झगड़ा करते रहते
कानों में जाकर चुभ जायें
ऐसी-ऐसी बातें कहते
टीचर जी ने फिर समझाया
हमको अच्छा पाठ पढ़ाया
बच्चों कभी बुरा मत कहना
बच्चों कभी बुरा मत सुनना
कभी बुरे के साथ न रहना
कभी बुरा तुम नहीं देखना
सब बच्चों ने किया ये वादा
आपस में नहीं लड़ेंगे
बुरी बात हम नहीं कहेंगे
बुरे काम हम नहीं करेंगे
बुरे संग में नहीं रहेंगे

✷

मोटू के जूते

मोटू को माँ बुला रही है पकड़ हाथ में जूता
माँ-माँ आओ जल्दी देखो मेरा जूता टूटा

घिसा तला और छेद हो गया एड़ी भी है टूटी
जूता नया दिला दे जल्दी तू क्यों मुझसे रूठी

पहन के जूता नया शान से जाऊँगा मैं स्कूल
ठक-ठक करता चलूँ लगे न ज़रा पाँव में धूल

हँसकर बोली माँ 'बेटे बाज़ार आज जायेंगे'
और अपने मोटू को जूते सुन्दर दिलवायेंगे

पहन के जूते अकड़-अकड़ कर चलेगा मेरा मोटू
आगे मोटू ठक-ठका ठक पीछे-पीछे छोटू

✷

माँ की साड़ी

माँ की साड़ी बड़ी निराली
रंग बिरंगे फूलों वाली

मुझको प्यारी लगती साड़ी
माँ ने अपने हाथों काढ़ी

हर पत्ती पर फूल-फूल में
माँ ने अपनी कला दिखाई

कपड़ा धागा और सुई से
उसने बगिया खूब बनाई

जो देखे वो रहे देखता
फिर माँ की तारीफ़ें करता

छोटा भैया माँ से कहता
मुझे काढ़ दो ऐसा कुरता

माँ मुझसे जब पूछे मुन्नी
तुझको साड़ी लगती कैसी

मैं कहती माँ इसे पहन कर
लगे मुझे तू देवी जैसी

✷

एक शपथ

आया दिन है आज छब्बीस जनवरी का
कर लें स्वागत आज छब्बीस जनवरी का

वर्षों तक संघर्ष करके दिन ये आया
लाखों सर कुरबान करके दिन ये आया

आज आज़ादी का अमृत पी रहे हम
सर उठा कर विश्व में अब जी रहे हम

आज हमने अपने अधिकारों को पाया
और गुलामी के विचारों को भुलाया

संविधान बनाके अपना आज के दिन
हमने भूले हैं पुराने दुःख दुर्दिन

आज के दिन बस शपथ हम एक लेंगे
देश पर कुरबान तन-मन-धन करेंगे

✷

बूँद-बूँद पानी

बूँद-बूँद पानी में रहता
जन-जन का जीवन है

दुनिया की हर चीज़ का जीवन
जल है, जल है, जल है

बूँद-बूँद पानी से जैसे
भर जाती है गागर

वैसे सुख के इक-इक क्षण से
भर लो अपनी चादर

बूँद-बूँद पानी को बचाकर
भर लो अपनी गागर

बूँद-बूँद पानी से मिलकर
बन जाता है सागर

पानी बचा-बचाकर
दुनिया को आज बचाओ

बिन पानी सारा जग सूना
सब को यह समझाओ

✷

कर्मपथ

कर्म करना धर्म है
गीता में प्रभु ने यह कहा

धर्म मेरा कर्म है
खुद से वचन मैंने लिया

आज मन में ठान अपने
कर्मपथ पर बढ़ चला

कर्म मेरा इष्ट है
मैं कर्मरथ पर चढ़ चला

अब प्रभू से विनय इतनी
शक्ति मुझको दे अटल

मैं डिगूँ न कर्मपथ से
भाव दे मुझको प्रबल

कोई भी लालच जगत का
मुझसे मेरा पथ न छीने

फल की इच्छा हो कभी न
कर्म कर लूँ भाव भीने

✳

गुड़िया का जन्म दिन

आज जन्मदिन है गुड़िया का

मम्मी लगी रसोईघर में
बना रही हैं ढेर मिठाई
पापा लाये खूब खिलौने
घर भर में है खुशियाँ छाई

आज जन्मदिन है गुड़िया का

डब्बू, बब्बू, पप्पू आये
सुन्दर-सुन्दर चीजें लाये
केक कटा फिर गाने गाये
तरह-तरह के खाने खाये

आज जन्मदिन है गुड़िया का

गुड़िया फूली नहीं समाती
अपनी चीजें हमें दिखाती
तुतलाकर जब बात बताती
गुड़िया सबके मन को भाती

आज जन्मदिन है गुड़िया का

गुड़िया सबको लगती प्यारी
गुड़िया सब दुनिया से न्यारी
महक रहा सारा घर आंगन
गुड़िया तो फूलों की क्यारी

आज जन्मदिन है गुड़िया का

मेरा भैया

नाच रहा है ता-ता थैया
मेरा राजा भैया
देख-देख कर विहँस रही है
मेरी भोली मैया
साथ-साथ अपने भैया के
मैं भी गाती गाना
नाचे भैया गाती बहना
देखें नानी नाना
ठुमक-ठुमक धरती पर चलता
है वो पैयाँ-पैयाँ
दादी बड़े प्यार से उसको
कहती मेरा कृष्ण कन्हैया
सारी दुनिया से प्यारा है
मुझको मेरा भैया
नाच रहा है ता-ता थैया
मेरा राजा भैया ।

✷

भारत माता की बेटी

नहीं चाहिए गुड्डा-गुड़िया
नहीं चाहिए मुझे खिलौने
माँ मेरे मन में जागे हैं
नए अलग से स्वप्न सलोने

सुना पड़ोसी एक हमारा
हम पर गोली बरसाता है
भाई-भाई का नारा देकर
हमसे धोखा कर जाता है

गोद करी माता की सूनी
सूना किया दुल्हन का माथा
बहुत सुन चुकी हूँ मैं अब तक
उस अत्याचारी की गाथा

माँ अब चूड़ी नहीं चाहिए
मुझे एक बन्दूक मँगा दे
केसरिया बाना पहना दे
मेरे माथे तिलक लगा दे

मेरी प्यारी भारत माँ को
जो देखेगा आँख उठाकर
उसको सबक सिखाना मुझको
उसकी उठती आँख झुकाकर

मैं भारत माता की बेटी
रानी झाँसी बन जाऊँगी
हाथों में बन्दूक उठाकर
दुश्मन से लड़ने जाऊँगी

✷

मुझी से म्याऊँ

मेरी बिल्ली मुझी से म्याऊँ
हर दम पूछे आऊँ-आऊँ
खेलूँगा मैं संग तुम्हारे
कहो कौन से खेल खिलाऊँ
खुला रसोईघर तुम रखना
दूध मलाई क्या-क्या खाऊँ
चूहे तंग तुम्हें करते हैं
कितने मोटे चूहे खाऊँ
करवाने जो काम करा लो
वरना अपने घर को जाऊँ
अब पूजा करनी है मुझको
मैं समाधि में चली न जाऊँ
देख रहा हूँ मैं मौसी को
लगता इसके कान कटाऊँ
गुस्से से मैं चिल्लाता हूँ
मेरी बिल्ली मुझी से म्याऊँ

शुभ दीपावली

दीपावली शुभ आ गई
ख़ुशियाँ चहुँ दिशि छा गईं

राम आ गए बनवास से
नाचे सभी उल्लास से

जय राम जय-जय राम की
पूजा करो श्री राम की

ढोल और नगाड़े बज रहे
बम-बम पटाखे चल रहे

दीपों की अवलि जल रही
जगमग ये धरती कर रही

कर बुराई पर विजय राम आ गए
जीतकर रावण को राम आज आ गए

बाँटते आपस में सब खीलें मिठाई प्यार से
हैं गले सब मिल रहे इक दूसरे से प्यार से

कितनी खुशी और प्यार है कितना बड़ा त्यौहार है
भागा अमावस का तिमिर ज्योतिर्मय सब संसार है

सबके हृदय को भा गई
दीपावली शुभ आ गई ।

✷

प्यारा गणतंत्र

गणतंत्र दिवस तो हम सबको
प्राणों से प्यारा लगता है
कितना मंगलमय और पावन
यह सबसे न्यारा लगता है
अधिकारों और कर्त्तव्यों की
यह याद दिलाता है हमको
अधिकार जहाँ कर्त्तव्य वहाँ
यह बात बताता है हमको
यह देश हमारा हम इसके
यह सीख हमेशा देता है
भारत में रहता जो मानव
वह भारत माँ का बेटा है
गणतंत्र दिवस ने हमें दिये
कानून हमारे जो अपने
वरना गुलाम भारत में तो
ये सब थे बस झूठे सपने
गणतंत्र दिवस पर याद करें
हम वीरों की कुरबानी को
तजे जिन्होंने प्राण देश पर
उन भक्तों की कहानी को

✷

बढ़ते रहो

डरो मत
झुको मत
रुको मत

किसी से न कहना
किसी की न सहना
न पीछे ही रहना

न अधूरे रहो
काम पूरे करो
सिर उठाकर जियो

उधार मत करो
प्रहार मत करो
आह मत करो

हँसते रहो
चलते रहो
बढ़ते रहो

✷

अखबार

यह देखो मेरा अखबार
इससे मैं करती हूँ प्यार

रोज़ सवेरे घर में आता
नई ख़बर है रोज़ सुनाता

कार्टून कोना और कहानी
कितनी बातें नई पुरानी

कितनी बातें हैं विज्ञान की
कितनी बातें ज्ञान ध्यान की

मेरे घर में सब पढ़ते हैं
पढ़कर हम आगे बढ़ते हैं

सब कुछ पढ़कर करें विचार
यह देखो मेरा अखबार
इससे मैं करती हूँ प्यार

✷

पढ़-पढ़-पढ़

दूध पियेंगे गट-गट-गट
काम करेंगे फट-फट-फट
दरवाज़े पर खट-खट-खट
माँ आई उठ जा झट पट
विद्यालय का समय हो गया
क़दम बढ़ाओ झट-झट-झट
घंटी की आवाज़ आ रही
चलो भाग लो अब सरपट
मोटर गाड़ी आगे आती
बीच सड़क से हट-हट-हट
विद्यालय के अन्दर जाकर
बैठे क्लास में पढ़-पढ़-पढ़

✷

पूजा घर

माँ ने घर में एक बनाया
प्यारा सा पूजाघर
रोज़ सवेरे उसमें करते
पूजा हम सब मिलकर
उसमें बैठे राम लखन जी
सीता जी हनुमान
शिव जी पार्वती जी गणपति
और राधा घनश्याम
लक्ष्मी दुर्गा मात सरस्वती
वास करें मन्दिर में
हम भी सबकी मूर्ति बसा लें
अपने मन मन्दिर में
धूप दीप फूलों को लेकर
हम सब पूजा करते
जब तक पूजा न हो जाये
काम न दूजा करते
ईश्वर से हम यही माँगते
दो इतना वरदान
जग में सब हों सुखी स्वस्थ
और सबका हो कल्याण

✷

मेरी पुस्तक

मेरी पुस्तक प्यारी-प्यारी
दुनिया भर से न्यारी-न्यारी
सुन्दर-सुन्दर चित्रों वाली
अच्छे-अच्छे मित्रों वाली
इसमें लिखी वही कहानी
जिसे सुनाती मेरी नानी
पापा ने यह पुस्तक ला दी
मुझे पढ़ाती मेरी दादी
मुझको अच्छी लगती पुस्तक
मैंने पढ़ ली सारी-सारी
मेरी पुस्तक प्यारी-प्यारी
दुनिया भर से न्यारी-न्यारी

✷

अम्मा का रसोईघर

मेरी अम्मा का रसोईघर
बड़ा अजब है
बड़ा ग़ज़ब है
मुझको तो इस भली जगह में
सबकुछ लगता गड़बड़ भैया
बूरा नमक एक लगते हैं
पीली-पीली दालें सब हैं
पर कोई है मूँग
कोई है अरहर भैया
यहाँ सभी है गड़बड़ भैया
जितने बर्तन उतने नाम
सबके अलग-अलग हैं काम
चमचा, करछुल चम्मच चकला
सबके अपने-अपने काम
ज़रा हुआ गहरा बर्तन तो
उसको कहें कढ़ाई पतीला
ज़रा हुआ उथला तो उसका
नाम पड़ा है ढक्कन भैया
यहाँ सभी है गड़बड़ भैया
हर बर्तन की हर डिब्बे की
अलग बनावट अपनी ढब है
मेरी अम्मा का रसोईघर
बड़ा अजब है
बड़ा ग़ज़ब है ।

मेरा घर मेरा मन्दिर

यह है मेरा प्यारा घर
सब दुनिया से न्यारा घर
यहाँ हैं मेरे मम्मी-पापा
बहन-भाई दादा-दादी
कितना अनुशासन है घर में
कितनी सारी आज़ादी
मेरा घर है मेरा मन्दिर
मेरा घर शाला मेरी
मेरे पिता ईश हैं मेरे
और गुरु माता मेरी
इस घर में ही सीखा मैंने
दुनिया में कैसे रहना
घर ही सिखलाता है मुझको
एक साथ मिलकर रहना
पढ़ना खाना और खेलना
साथ रहें हम हिल-मिलकर
यह है मेरा प्यारा घर
सब दुनिया से न्यारा घर ।

बात बड़ों की

छम-छम बरस रहा है पानी
याद आ रही है मुझको नानी
नानी मुझे सुनाये कहानी
एक था राजा, एक थी रानी
राजा का बेटा था नटखट
रोज़ किया करता था खटपट
उसकी थी इक छोटी बहना
नहीं मानती थी वह कहना
टीचर आये एक पढ़ाने
दोनों बच्चे बने सयाने
भाग-भाग कर करते काम
नहीं करें आनाकानी
टीचर भी खुश बच्चे भी खुश
खुश हैं अब राजा-रानी
बात बड़ों की बच्चे मानें
यही बताती हमें कहानी
अच्छे बच्चों से खुश रहते
दादा-दादी-नाना-नानी

✷

चंदा ला दो

मम्मी मुझको चंदा ला दो
बात करूँगा मामा से
कहाँ से आते, कहाँ को जाते
सब पूछँगा मामा से
सूरज से वो डरते क्यों हैं
भाग कहाँ जाते दिन में
इतने ढेर सितारों को वो
कहाँ छुपाते हैं दिन में
प्रश्न बहुत से मेरे मन में
मुझे पूछने मामा से
अब मैं सोने को जाता हूँ
सपने लेने मामा के

✷

मेरा बस्ता

मुझको लगता सबसे प्यारा
मेरा बस्ता सबसे न्यारा
इसमें अपने पेन पेंसिल
पुस्तक कॉपी रखता हूँ
रंग का डिब्बा खाने का डिब्बा
पानी की बोतल रखता हूँ
रोज़ रात को सारी चीज़ें
देख के इसमें रखता हूँ
कोई चीज़ छूट न जाये
बड़ा ध्यान मैं रखता हूँ
इसके अन्दर रखता हूँ मैं
पढ़ने की चीज़ें सारी
जब मैं इसको लेकर चलता
नहीं मुझे लगता भारी
माँ कहती है बस्ते में है
जीवन का उजियारा
मेरा बस्ता सबसे प्यारा
मेरा बस्ता सबसे न्यारा

*

चंदा मामा की बारात

चंदा मामा की बारात में
कितने ढेर सितारे
नाचूँ गाऊँ खुश हो जाऊँ
मुझे मिलें जो सारे
टिम-टिम खेलें आँख मिचौली
देते हमें उजाले
मुझसे कहते बिटिया रानी
चंदा तुम्हें पुकारे
ठुमक-ठुमककर घूम रहे हैं
आसमान में सारे
चंदा मामा के बाराती
नाचें धिन-धिन धा रे ।

✷

मैं गुलाब हूँ

मैं गुलाब हूँ मैं गुलाब हूँ
मैं फूलों का राजा हूँ
अपनी प्यारी खुश्बू द्वारा
दूर से जाना जाता हूँ
लाल गुलाबी काला पीला
श्वेत रंगीला प्यारा नीला
सब रंगों में आता हूँ
सबको खूब लुभाता हूँ
मेरे पेड़ में काँटे भी हैं
पर वो मेरे साथी हैं
कोमल कलियाँ काँटों में भी
अपनी छटा दिखाती हैं
जो भी तोड़े मुझे प्यार से
उसका हृदय सजाता हूँ
मैं गुलाब हूँ मैं गुलाब हूँ
मैं फूलों का राजा हूँ

✷

मेरी अम्मा

मेरी अम्मा सबसे न्यारी
मुझको लगती सबसे प्यारी

सुबह प्यार से मुझे जगाती
मल-मल कर साबुन नहलाती

खूब प्यार से मुझे खिलाती
शाला को तैयार मुझे कर
बस में जाकर मुझे चढ़ाती

जब मैं शाला में आता हूँ
खिला-पिला कर मुझे पढ़ाती

मुझे खेलने को कहकर फिर
खाना मेरे लिए पकाती

मुझे खिला कर बड़े प्यार से
लोरी गाकर मुझे सुलाती

सोकर भी सपने में मुझको
अम्मा दिखती प्यारी-प्यारी

मेरी अम्मा सबसे न्यारी
मुझको लगती सबसे प्यारी

अक्षरों के दीप

अक्षरों से अक्षरों के दीप तुम आकर जलाओ
आओ दीपक ज्ञान के तुम आज घर-घर में जलाओ

कोई अनपढ़ रह न जाये, कोई टेके न अँगूठा
कोई रोकर यह न बोले, हाय मेरा भाग्य फूटा

देश में परदेस में बस, साथ ही यह ही ज्ञान होगा
तुम जहाँ जाओ रहो, यह ज्ञान हर सम्मान होगा

मित्र सच्चा है तुम्हारा, ज्ञान जो तुमको मिला है
मान आदर धन तुम्हारा, पुस्तकों से जो मिला है

मित्र सम्बन्धी कभी यदि, दूर हों तुम डर न जाना
अच्छी-अच्छी पुस्तकों को, मित्र अपना तुम बनाना

करो अर्जित ज्ञान को फिर दूसरों को तुम जगाओ
ज्ञान की खेती करो तुम ज्ञान की फ़सलें उगाओ

अक्षरों से अक्षरों के दीप तुम आकर जलाओ
आओ दीपक ज्ञान के तुम आज घर-घर में जलाओ

✷

विद्यालय

विद्यालय
विद्या की देवी सरस्वती का पूजा स्थल
केवल ईंट गारे का बना एक मकान नहीं
केवल विद्या बेचने की एक दुकान नहीं
वह विद्यालय नहीं
जिसमें विद्या की देवी का आह्वान नहीं
वह विद्यालय नहीं
जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी का सम्मान नहीं
विद्यालय पढ़े लिखे लोग निकालने का कारखाना नहीं
विद्यालय दौलत बनाना सिखाने का
या घंमड के नशे में रहना सिखाने वाला मैखाना नहीं
विद्यालय है मानव को मानव बनाने का स्थल
विद्यालय है चरित्र और व्यवहार को ऊँचा बनाने का सम्बल
विद्यालय की एक-एक ईंट में ब्रह्मा विष्णु महेश का निवास है
विद्यालय के कण-कण में देवी सरस्वती का वास है
उसी देवी के नाम की आओ आज शपथ लें
शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही
विद्यालय, देश, समाज और संसार को
आदर्श बनाने के पथ पर चलें।

✷

सूरज दादा का आँगन

सूरज दादा के आँगन में
लगा हुआ है मेला
रंग-रंग के बादल मिलकर
खेल रहे हैं खेला
लाल गुलाबी नीले-पीले
श्वेत सुनहरे काले
रूई जैसे चाँदी जैसे
झूम रहे मतवाले
कोई छटा दिखाते ऐसी
जैसे हों नारंगी
आसमान ने ओढ़ी जैसे
हो चूनर सतरंगी
बना आईना सागर को
सब झाँक रहे हैं उसमें
अपने रंगों की छटाओं का
घोल रहे रंग उसमें
नील गगन से झाँक रहे हैं
चंदा और सितारे
राह हमारी ताक रहे हैं
नीचे मित्र हमारे
ख़त्म हुआ साम्राज्य तुम्हारा
शुरू हमारा खेला
अब घर जाओ सूरज दादा
हुई साँझ की बेला ।

✷

याद करें जब लोग हमें

साँझ पड़े दिन ढल जाता है
रात आती दिन आता है
इसी तरह दिन ढलते उगते
जन्म गुज़रता जाता है
ढल जायें ये दिन यादों में
कर जायें हम कुछ ऐसा
याद करें जब लोग हमें
बोलें "वाह था इन्साँ कैसा"
जीवन काट सभी जाते हैं
जीकर कुछ ही जाते हैं
खुद जीते हैं औरों को भी
राह दिखा कर जाते हैं
मानव जीवन सीमित है
पर काम असीमित होते हैं
होते वही सफल जीवन में
काम उचित जो करते हैं

✷

मस्तक पर है मुकुट हिमालय

मेरा भारत देश मुझे है प्राणों से प्यारा
जहाँ चमकते रैन दिवस सूरज चंदा तारा
कितनी ऋतुएँ कितने मौसम आते जाते रहते
कितने दरिया और समन्दर अपनी धुन में बहते
मस्तक पर है मुकुट हिमालय और चरणों में सागर
सिर पर नीलाकाश लिये हीरे मोती की चादर
राम कृष्ण और महावीर गौतम नानक सब आए
जिनकी शिक्षाओं ने दुनियाभर में दीप जलाए
मेरा भारत सर्वधर्म का एक अनोखा देश
भिन्न-भिन्न बोली भाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं वेश
फिर भी सब बच्चे भारत के सबके दिल हैं एक
एक धर्म मानवता सबका चाहे धर्म अनेक
आस-पास सब बने हुए मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारा
मेरा भारत देश मुझे है प्राणों से भी प्यारा

✷

प्यारी बरखा रानी

आओ-आओ बरखा रानी
हमें पिलाओ पानी
राह तुम्हारी ताक रहे सब
बच्चे नाना-नानी

खेत पात सारे वन उपवन
नदियाँ और समन्दर
चीता शेर भैंस और गैया
चिड़ियाँ तोता बन्दर

सभी याद तुमको हैं करते
तुमको सभी बुलाते
जब तुम आतीं सब खुश होते
झूल-झूल कर गाते

पंख पसारे मोर नाचता
गाती कोयल काली
देख-देख तुमको खुश होते
सब किसान और माली

जब बादल पर हो सवार
तुम आतीं प्यारी बरखा
आती मीठी सुगन्ध
माटी की बड़ी सुहानी ।

✷

ऐसा संयोग

गया वक्त फिर हाथ न आये
सारा जग जाने यह बात
फिर भी वक्त गँवा कर मानव
खाता जीवन में आघात
खेत चुग गईं जब चिड़ियाँ
तब पछताने से क्या होगा
फिसल गया जो वक्त हाथ से
उसे याद कर क्यों रोता
बीत गया जो उसे भुला दो
आगे की अब बात करो
वक्त अभी भी जो है बाकी
उससे अपने हाथ भरो
सदुपयोग करके क्षण-क्षण का
जीवन को जी भर जी लो
खुशियाँ बाँट सभी अपनों को
खुद भी अमृत रस पी लो
राज़ यही अच्छे जीवन का
जब हो पल-पल का उपयोग
लौट कभी फिर न आयेगा
जीवन में ऐसा संयोग
बालक पन से प्यारे बच्चों
एक शपथ खुद से ले लो
सदा करोगे निज जीवन के
पल-पल का तुम सदुपयोग

✷

मधुर सपना

ज़िन्दगी में लाख तूफ़ानों को सहना
पर असम्भव शब्द तुम मुख से न कहना
क्या कभी तूफ़ान कोई ज़िन्दगी भर को अड़ा है
उसको इक दिन हारकर जाना पड़ा है
अनगिनत बाधायें आयें पर कहीं तुम रुक न जाना
देखकर कठिनाइयाँ तुम झुक न जाना
लक्ष्य पथ पर चल पड़ा जो रोक पाया कौन उसको
है अगर दृढ़ इच्छाशक्ति रोकने का है भला अधिकार किसको
प्रेरणा लेते रहो हरदम बुज़ुर्गों से तुम अपने
एक दिन हो जायेंगे पूरे तुम्हारे मधुर सपने
जो कभी झुकते नहीं बाधाओं तूफ़ानों के आगे
वो अकेले चल पड़े पर लोग पीछे उनके भागे
प्यार देकर प्यार लेकर तुम बना लो सबको अपना
फिर भला कैसे अधूरा रह सकेगा मधुर सपना

✷

ईश्वर का नामकरण

कौन हैं ये लोग
जो बाँट रहे हैं हमें
धर्म जाति अमीर ग़रीब या ऊँच-नीच में
क्यों खड़ी कर रहे हैं ये दीवारें हमारे बीच में
ये टुकड़े में नहीं बाँटते सिर्फ़ इन्सान को
ये अलग-अलग घरों में बाँटकर देते हैं भगवान को
मन्दिर-मस्जिद गुरुद्वारों में
गिरजाघर की मीनारों में
करते हैं नामकरण अपने-अपने भगवान का
ईश्वर भी हँसता देख साहस इन्सान का
इनका धर्म निहित है केवल मात्र स्वार्थ में
करते हैं दिखावा जैसे व्यस्त है परमार्थ में
वक्त रहते हम इनकी नीयत पहचान लें
अपनी आत्मा में निहित परमात्मा को जान लें
वरना ये लोग हम में फूट डालकर
अपना स्वार्थ साधते रहेंगे
अपने-अपने ईश्वर के साथ
हमको बाँधते रहेंगे
आओ करलें हम एक परमात्मा का वरण
कैसे कर सकते हम ईश्वर का नामकरण

✷

उठो वीर

उठो वीर जागो निद्रा से
माँ ने तुम्हें बुलाया है
देखो कोई भारत माँ का
चैन छीनने आया है
भारत माँ का मुकुट हिमालय
कोई न देखे उसकी ओर
हिन्द महासागर चरणों में
जिसका कोई ओर न छोर
पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण
जहाँ तलक हैं सीमाएँ
सावधान रहना सीमा पर
कोई चोर न आ जाये
कोई पड़ोसी भाई कहकर
धोखा जब दे जाता है
पीड़ा से दिल फट जाता है
यह कैसी मानवता है
वीर प्रेम विश्वास रहे
पर आँखें सदा खुली रखना
विश्वासों पर घात
क्रूर अन्याय कभी तुम न सहना
पूर्ण देश है साथ तुम्हारे
सबकी दुआ तुम्हारे साथ
बढ़ो क़दम से क़दम मिलाकर
बढ़ो मिला हाथों से हाथ

✷

सपने सुनहरे

हम चलें उजालों की ओर
दूर करें अँधेरे
अपनायें मार्ग सत्य का
उड़ जायें असत्य के बादल घनेरे
अगर कभी मंज़िलों के रास्ते खो जायें
लक्ष्य के पथ से हम भटक जायें
चौराहे बीच खड़े सोचें किधर जायें
जीवन के हर पल पर लग जायें
दुर्भाग्य के पहरे
ऐसे में रुकना नहीं
ऐसे में झुकना नहीं
ऐसे में थकना नहीं
सोच लेना अँधेरे कितने ही हों गहरे
हर अँधेरी रात के बाद आते हैं सवेरे
सात घोड़ों के रथ पर
जीवन के सतरंगे चित्र लिये
रोज़ निकलता है सूरज
दूर कर देता है सारे अँधेरे
नई सुबह के साथ लाता है
सपने सुनहरे ।

✷

मुन्नी की चुन्नी

मुन्नी की चुन्नी उड़ी-उड़ी
इधर मुड़ी और उधर मुड़ी

घूमी सागर और पहाड़
अटकी झाड़ और झंखाड़
तैरी नदिया और तलाब

जंगल-जंगल घूम आई
पेड़ के संग झूम आई
खूब मचा कर धूम आई

अटकी पेड़ों पर जाकर
उड़ी ज़ोर से इतराकर
गिरी नदी में फिर आकर

धोबी ने देखी चुन्नी
बोला देखी सी चुन्नी
हाँ ये तो मुन्नी की चुन्नी

लाओ धोकर प्रेस करूँ
बनी हुई है गुड़ी-मुड़ी
मुन्नी की चुन्नी उड़ी-उड़ी
इधर मुड़ी और उधर मुड़ी ।

✷

कड़क दिसम्बर

झोली भर ठंडक लाया
कड़क दिसम्बर है आया
हड्डी तक है जाती ठिठुरी
रात में तो बन जाती गठरी
कैसा तगड़ा पड़ता जाड़ा
बड़ा बहादुर हिम्मत हारा
सूरज बाबा भी छू मन्तर
आया देखो कड़क दिसम्बर
छोटे-छोटे दिन हो जाते
लम्बी हो जाती हैं रातें
छोटे दिन फुर से उड़ जाते
झट आ जातीं ठंडी रातें
धूप भाग जाती डर-डर कर
काँप रहे सब थर-थर-थर-थर
घिर आई ठंडी छाया
कड़क दिसम्बर है आया ।

✷

मेरी अम्मा प्यारी है

दुनिया भर से न्यारी है
मेरी अम्मा प्यारी है
खाना मुझे खिलाती है
मुझको रोज़ पढ़ाती है
बातें नई बताती है
अच्छी कथा सुनाती है
जब वो मुझे सुलाती है
लोरी मुझे सुनाती है
कोई न माँ सा प्यार करे
कोई न माँ सा लाड़ करे
मेरा घर है उपवन जैसा
माँ फूलों की क्यारी है
दुनिया भर से न्यारी है
मेरी अम्मा प्यारी है

✷

दूसरों के दोष

देख मत तू दूसरे के दोष को
अपने मन में भी
ज़रा तू झाँक ले
दूसरा अच्छा है या फिर है बुरा
इससे पहले तू
स्वयं को आँक ले
इक बुराई दूसरे की देखकर
सौ नज़र अपने में भी
आ जायेंगी
एक ऊँगली जो उठेगी और पर
तीन अपनी ओर भी
उठ जायेंगी
इसलिए कहता हूँ
रोको क्रोध को
मत निकालो दूसरे के
दोष को
प्यार से अपने सभी हो जायेंगे
दोष देकर तू घृणा को न बढ़ा
गर बुराई मित्र में देखी कभी
स्नेह की भाषा से उसको तू पढ़ा
दोषारोपण तो
नहीं है हल कोई
तुम कभी छोड़ो न
अपने होश को
देख मत तू
दूसरों के दोष को

✷

आज़ादी का त्यौहार

आज आज़ादी का त्यौहार
हमारी खुशियों का त्यौहार
हुए सबके सपने सच्चे
नाचते गाते सब बच्चे
यहाँ भाई-भाई सब लोग
मिट गया भेद-भाव का रोग
छा गई मन में आज बहार
आज आज़ादी का त्यौहार
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान
हमारे सपनों का ये जहान
हिमालय शीश मुकुट इसके
सागर पैर धोये इसके
हमारी जाँ इस पर बलिहार
आज आज़ादी का त्यौहार
करेंगे अच्छे-अच्छे काम
देश का ऊँचा होगा नाम
कहेंगे दुनिया भर के लोग
अनोखे हैं भारत के लोग
करेगा आदर सब संसार
आज आज़ादी का त्यौहार

दिनकर

जब खुला उषा का अवगुंठन
नवकलियों ने ली अंगड़ाई
बिखरीं निखरीं किरणें चहुँदिशि
सूरज में आई तरुणाई

जग में आया फिर नव प्रभात
जगमग-जगमग घर द्वार सभी
अँधियारे से बाहर आकर
अब जाग गए नर-नार सभी

सूरज निकला सब व्यस्त हुए
सब कर्म करें अपने-अपने
सूरज की सतरंगी किरणें
ले आतीं सतरंगे सपने

उन सपनों को पूरा करने
सब निकल पड़े अपने घर से
दो हमें शक्ति दो हमें भक्ति
पायें प्रकाश तेरे दर से

सब करें सूर्य को नमस्कार
सब करें प्रार्थना इक स्वर से
हम अन्धकार से चलें ज्योति की ओर
सभी करबद्ध कह दे दिनकर से

✷

नया प्रकाश

हम बच्चे हिन्दुस्तान के
नई ज्योति दिखलायेंगे
प्रगति, शिक्षा और कर्म का
नव प्रकाश फैलायेंगे
सत्य अहिंसा की मशाल ले
आगे क़दम बढ़ायेंगे
अपने क़दमों से मंज़िल को
अम्बर तक पहुँचायेंगे
प्रेम प्यार की ज्योति जगाकर
जो इतिहास बनायेंगे
उससे ही हम बच्चे जग में
नव प्रकाश फैलायेंगे ।

✷

क्यों हमें तुम बाँधते हो ?

क्यों हमें तुम बाँधते हो
संकुचित सीमाओं में
हमको रहने दो
क्षितिज से दूर की सीमाओं में
हम रहेंगे दूर ज़ात और पात की सीमाओं से
हम रहेंगे दूर धर्म और देश की सीमाओं से
हम नये पौधे हैं हमको फैलने दो प्रेम से
हम बना लें विश्व को परिवार अपने प्रेम से
तुम न हममें फूट डालो हम बढ़ायें एकता
दूर कर शैतानियत को हम बनेंगे देवता
आज हम छोटे हैं पर होंगे बड़े जो प्रेम से
जीत लेंगे विश्व के सब धर्म अपने प्रेम से
कौन हिन्दू सिक्ख, मुस्लिम
कौन यह ईसाई है
खून सबमें लाल है
हम सब ही भाई भाई हैं ।

तारे

चुपचुप–चुपचुप आते तारे
गुपचुप–गुपचुप जाते तारे

रात अंधेरे में हैं आते
सुबह सवेरे चले हैं जाते

झिलमिल–झिलमिल करते रहते
टिमटिम–टिमटिम जलते बुझते

छा जाते हैं आसमान पर
न्यौछावर होते हैं चाँद पर

एक बात बस नहीं बताते
दिन में चले कहाँ हैं जाते

चंदा तारे आते रहना
हमको राह दिखाते रहना

✳

मेरी गुड़िया

मेरी प्यारी गुड़िया रानी
मुझको लगती बड़ी सयानी

यह है मेरी सगी सहेली
फिर भी रहती एक पहेली

रात और दिन संग रहती है
फिर भी बात नहीं करती है

दिन भर खेलें मेरे साथ
डाल मेरे हाथों में हाथ

आ सो जाती मेरे साथ
सपनों में करती है बात

सुबह सवेरे जब मैं उठती
राम-राम इससे हूँ कहती

आँख झपक कर मुझे देखती
बन जाती फिर गूँगी रानी

मेरी प्यारी गुड़िया रानी
मुझको लगती बड़ी सयानी

✷

मेरी पाठशाला

मेरी पाठशाला, मेरी पाठशाला
मिला है मुझे अब
खुशी का मसाला
मेरी पाठशाला में
सब लोग अच्छे
बड़े प्यारे लगते
मुझे सारे बच्चे
पढ़ाई, लिखाई
ये खेलों की दुनिया
बड़ी हो चली है
ये मम्मी की मुनिया
बड़ी प्यारी न्यारी है
मैडम हमारी
बहन सी, सखी सी
वो मा सी हमारी
वो जीवन में मेरे
है भरती उजाला
मुझे प्यारी लगती
मेरी पाठशाला ।

✷

आते बादल

जल भर कर किस–किस सागर से
गागर में भर लाते बादल
नगर–नगर में डगर–डगर में
जी भरकर बिखराते बादल
शुष्क वनस्पति प्यासी धरती
सबकी प्यास बुझाते बादल
अम्बर तकते कृषक जनों को
सुख की आस दिलाते बादल
जगती के इक–इक कण को
अमृत से सरसाते बादल
धार–धार अमृत रस बरसे
प्रेम सुधा बरसाते बादल

✷

मेरी मुनिया

यह मेरी छोटी सी गुड़िया
है पूरी जादू की पुड़िया
जब–जब इसका मुखड़ा देखूँ
खाना–पीना भूल जाऊँ मैं
जब–जब इसको हँसता देखूँ
इन्द्रधनुष पर झूल जाऊँ मैं
इसका रोना, सोना, जगना
लगे निराला सब दुनिया से
तीनों लोकों का सुख जैसे
मिला मुझे मेरी मुनिया से
जब सोती है लगता जैसे
परियों की रानी है सोई
हँसे ज़माना हँसता लगता
इसके जैसा और न कोई
इसके जादू की डोरी में
घर के सब जन बँधे हुए हैं
इसकी प्यार भरी आँखों में
सबके सपने रचे हुए हैं

✷

कलम बड़ी तलवार से

कहावत पुरानी है 'कलम बड़ी तलवार से'
बच नहीं पाता कोई इस कलम की मार से
भाग कर तलवार से आदमी बच जाता है
भाग जाये कहीं भी कलम से न बच पाता है
तलवार एक बार में एक जान लेती है
कलम एक बार में हज़ारों को डस लेती है
घाव तलवार का एक दिन भर जाता है
घाव कलम की मार का ज़िन्दगी भर रिसता है
तलवार इन्सान को सदा ज़मीन ही सुँघाती है
कलम गर चाहे तो आकाश तक पहुँचाती है
टूट गई तलवार तो बच गया आदमी
टूट गई कलम तो मर गया आदमी

✷

नन्ही गुड़िया

यह मेरी नन्ही सी गुड़िया
है पूरी आफ़त की पुड़िया
मीठे-मीठे गाने गाती
छम-छम-छम-छम
नाच दिखाती
मटक-मटक कर
ठुमक-ठुमक कर
सारे घर का
दिल बहलाती
यह है मेरे घर की रोनक
यह है मेरी पूरी दुनिया
सारा घर खुश हो जाता है
गुड़िया से जब खेले गुड़िया
यह मेरी नन्ही सी गुड़िया
है पूरी आफत की पुड़िया

✷

पानी

घास, पेड़, पौधे या प्राणी
सबका जीवन होता पानी
रंग बिरंगे पौधे फूल
बिन पानी सब हों निर्मूल
पानी रहे तो है हरियाली
वरना सब बन जाता धूल
पानी देता फूल रंगीले
वरना सब बन जाते शूल
जो पानी को व्यर्थ बहाता
वह मानव करता है भूल

✷

खिलौने वाला

मम्मी खेल खिलौने वाला
भैया देखो आया है
तरह-तरह के रंग-बिरंगे
खेल खिलौने लाया है
पों-पों बाजा
धूम-धड़का
ढम-ढम ढोलक लाया है
खूब बचाकर पैसे भर लूँ
सुन्दर गोलक लाया है
चुहिया चिड़िया
छम-छम गुड़िया
बंदर भालू लाया है
देखो बिल्कुल असली जैसे
गोभी आलू लाया है
भैया हमें बुलाता देखो
जल्दी से पैसे दे दो
हम लायेंगे खेल खिलौने
और तमाशा तुम देखो ।

सैनिक के चरणों में

करे समर्पित तुमने अपने
प्राण देश के चरणों में
हम अर्पित करते श्रद्धा के
फूल तुम्हारे चरणों में
अपना जीवन देकर तुमने
दिया देश को जीवन दान
तुम जैसे पीरों के दम से
बनता भारत देश महान
बन्धु व्यर्थ कभी न होगा
यह तेरा अनुपम बलिदान
भारत सदा अखण्ड रहेगा
मिले हमें प्रभु का वरदान
वीर सपूत मातृ भू के तुम
अमर तुम्हारा नाम रहे
चहुँ दिशी गूँजे नाम तुम्हारा
जब तक सूरज चाँद रहे
तीन लोक का धन वैभव
और पुण्य तुम्हारे चरणों में
हम अर्पित करते श्रृद्धा के
फूल तुम्हारे चरणों में ।

✷

जागो मोहन प्यारे

आ माँ लोरी मुझे सुना दे
गा-गा लोरी मुझे सुना दे
देखूँ सपने प्यारे-प्यारे
बाग़ बगीचे और फव्वारे
भागूँ मैं तितली के पीछे
जुगनू भँवरों से मिल आऊँ
जंगल-जंगल घूम-घूमकर
फूलों जैसा मैं खिल जाऊँ
नदी समन्दर पर्वत झरने
सबसे मिलकर जब मैं आऊँ
मुझसे दूर नहीं जाना तुम
तुमको आसपास ही पाऊँ
मुझे जगाना गाकर गाना
जागो मोहन प्यारे प्यारे
सुबह हो गई अब तुम जागो
मम्मी की आँखों के तारे।

✷

सोना-मोना

माँ की छोटी बिटिया सोना
उसकी एक सहेली मोना
दोनों मिलकर खेलें गुड़िया
दोनों हैं आफत की पुड़िया
गुड़िया उनकी बड़ी निराली
मोटी-मोटी आँखों वाली
सोना-मोना झूलें झूला
झूल-झूल खाना भी भूला
माँ ने जब आवाज़ लगाई
सोना-मोना दौड़ी आईं
माँ ने कहा हुई अब रात
छोड़ो अब खेलों की बात
समय पे सोना और जागना
समय पे खाओ खाना
सारे काम समय से करना
कभी समय न खोना
करी प्रार्थना और सो गई
दोनों सोना-मोना ।

✷

माँ की किरण परी

मेरे जन्मदिवस पर माँ ने मेरी फ्राक बनाई
रंग-रंगीली सुन्दर चमकी उसमें टाँक लगाई
तीन तहों में लटके उसमें झालर प्यारी-प्यारी
माँ ने फ्राक बनाई ऐसी लगती सबसे न्यारी
सब कहते मैं उसे पहन कर लगती एक परी सी
माँ कहती मेरी बिटिया वो आई किरण परी सी
मेरे घर में हुआ उजाला किरण परी जब आई
खुशियों का सागर लहराया सबसे मिली बधाई
बड़े प्यार से मुझे सजाती मुझको मेरी मम्मी
सजा-सजाकर मुझको देती मीठी-मीठी चुम्मी
दुनिया भर में सबसे अच्छे मेरे मम्मी पापा
अब मैं जाती केक काटने भैया मुझे बुलाता

✷

मित्र हैं किताबें

मानव की सबसे बड़ी मित्र हैं किताबें
इनमें लिखी हुई हैं अच्छी-अच्छी बातें
बातें पशु पक्षी की बातें इन्सान की
बातें देवी-देवताओं की बातें भगवान की
कभी चुप बैठकर सोचने को कहती हैं
कभी करा देती हैं सैर तीन लोकों की
कभी ले जाती हैं गर्म रेगिस्तानों में
कभी बातें ठंडे बर्फीले झोंकों की
कभी दिखाती हमको आकाश के तारे
कभी पाताल की गहरी गहराइयाँ
सिखाती हैं बातें बड़ी बुद्धिवाली
जिनसे मिलें जीवन में हमको ऊँचांइयाँ
घर बैठे दुनिया की सैर कराती हैं किताबें
सचमुच ज्ञान का भण्डार हैं किताबें
शब्दों और चित्रों वाली विचित्र हैं किताबें
मानव की सबसे बड़ी मित्र हैं किताबें ।

चिड़िया के बच्चे

एक घोंसले में चिड़िया के
अंडे रखे चार
कुछ दिन बाद निकल कर आये
उसके बच्चे चार
चूँ-चूँ करके चिड़िया ने
मित्रों को करी पुकार
मित्रों ने आकर बरसाया
उन बच्चों पर प्यार
कुछ दिन बाद पंख जब आये
बच्चे घर से बाहर आये
दूर देश उड़ गए वो चारों
बच्चे पंख पसार
बैठ अकेली पेड़ पे चिड़िया
चूँ-चूँ करे पुकार
जाओ कोई बुलाकर लाओ
मेरे बच्चे चार
एक दिवस लौटकर आये
उस चिड़िया के बच्चे चार
बोले देखी दुनिया सारी
अपने घर से हमको प्यार
चिपका लिया कलेजे से
चिड़िया ने उनको पंख पसार ।

✷

माँ के हाथों की रोटी

माँ के हाथों की रोटी का स्वाद
मुझे हर समय रहता याद
माँ की रसोई में कितने डिब्बे
कितने सारे मिर्च मसाले
चीनी चाय घी तेल हैं क्या-क्या
कितने चावल कितनी दालें
तरह-तरह के बर्तन कैसे
उनके नाम याद रखती है
कैसे उसको पता है लगता
कौन चीज़ कैसे पकती है
कैसे तरह-तरह के खाने
कब सीखे कैसे हैं बनते
भाग रसोई में जाती क्यों
कूकर जब सीटी लगे बजाने
गोल-गोल फूली रोटी की
खुश्बू जब रसोई से आती
मुँह में पानी भर-भर लाती
भूख पेट को है लग जाती
चटनी और अचार भी कितने
बड़े प्यार से रहे बनाती
बड़िया पापड़ चिप्स पकोड़े
माँ को कितनी चीज़ें आतीं
खाऊँ माँ के हाथ का खाना
कुछ न भाये उसके बाद
माँ के हाथों की रोटी का स्वाद
मुझे हर समय रहता याद

बादलों के घड़े

आसमान से आईं आवाज़ें कुछ टकराने की
जैसे होड़ लगी हो कोई शोर मचाने की

देख तरह-तरह के बादल आसमान में छाये
उनकी शक्ल देखकर हमने ढेरों चित्र बनाये

कोई गोल गुब्बारे जैसे कोई हाथी जैसे
परियों जैसे पंखों वाले कोई ऊँटों जैसे

करें गर्जना शेरों जैसी जो दिल को दहला दें
पर कुछ क्षण में बरस-बरस कर सबका दिल बहला दें

दूर-दूर से आकर बादल करते हैं मनमानी
कहीं बाढ़ सी आ जाती है कहीं न बरसे पानी

कहीं नष्ट पानी से फसलें कहीं बिना पानी के
कैसे कहें कारनामे हम बादल की शैतानी के

फिर आई आवाज़ ज़ोर की आसमान में हुई गड़बड़ें
पल में फूटे आसमान से बादल के अनगिन घड़े

✷

चूँ-चूँ भाई

चूँ-चूँ भाई बिल से निकले
मन में आया चोरी करलें
जा पहुँचे मीठी दुकान में
पानी भर आया ज़बान में
सोया था मोटी हलवाई
रबड़ी बरफी खूब उड़ाई
कुटुर-कुटुर सुन जागा मोटा
डंडा लेकर भागा मोटा
साथ थी उसके काली बिल्ली
म्याऊँ-म्याऊँ कर आई बिल्ली
निकल गई चूँ-चूँ की जान
कैसे आज बचेंगे प्राण
नहीं चलेगा कोई दाँव
भागा रखकर सिर पर पाँव
दौड़ भाग कर बिल में आये
जान बची तो लाखों पाये

✷

उड़ी पतंग

बैठ हवा के घोड़े पर
उड़ी उड़ चली उड़ी पतंग
बड़े जोश से उड़ी पतंग
हवा के संग-संग उड़ी पतंग

हरी गुलाबी नीली काली
सुन्दर-सुन्दर रंगों वाली
नील गगन में भरी पतंग
रंग भर-भर कर उड़ी पतंग

बन कर पक्षी उड़ी पतंग
इधर-उधर को मुंड़ी पतंग
हवा की धुन पर मटक रही
बीच पेड़ के अटक रही

राह में भटकी कहीं पतंग
कट कर लटकी कहीं पतंग
बँधी डोर से नाच रही
पूँछ लगा कर सजी पतंग

मुश्किल पड़ी सँभालो पतंग
पेचा लगा बचाओ पतंग
कट गई-कट गई हाय पतंग
चलो लूटकर लायें पतंग ।

✷

मेले में बंदर मामा

तन कर निकले बंदर मामा
पहन धारीदार पाजामा
कंधे पर रखा था डंडा
सिर पर एक बड़ा सा हंडा
थिरक रहे थे दे–दे ताल
आज मिलेगा कुछ तर माल
लड्डू बरफी या केला
यहाँ लगा शायद मेला
हिला के सिर मारी इक तान
बस बंदर की निकली जान
गिर गया डंडा फूटा हंडा
बंदर मामा गिरे धड़ाम
खिलखिल–खिलखिल हँसी बंदरिया
भागे मामा ओढ़ चदरिया ।

✷

बोलियाँ

चूँ-चूँ चिड़िया आती है
गाना मुझे सुनाती है
गुन-गुन भँवरा आता है
फूलों पर मंडराता है
बैठ आम की डाली पर
कुहू-कुहू कोयल गाती
चूहे चाचा को खाने
म्याऊँ-म्याऊँ बिल्ली आती
खाँव-खाँव करता बंदर
भौं-भौं कुत्ते के ऊपर
हिन-हिन कर बोला घोड़ा
मेंढक बोला टर-टर टर्र
करे कबूतर गुटरू गूँ
टें-टें तोता आता है
कुकड़-कूँ की तान लगा
मुर्गा शोर मचाता है
रोज़ सवेरे आता है
आकर मुझे जगाता है ।

✳

रखवारी आँखें

तीन लोक से न्यारी आँखें
सब जग की रखवारी आँखें
रक्षा आँखों की तुम कर लो
जीवन को खुशियों से भर लो
आँख नहीं जग नाहीं भाई
रोगों से पाओ छुटकारा
तो देखो जग का उजियारा
मन की आँखें खोल के रखना
जग की आँखें बचा के रखना
जग और मन की आँखों से तुम
सतरंगी दुनिया बसा के रखना
जब हों साथ हमारे आँखें
तब लग जाती हैं पाँखें
तीन लोक से न्यारी आँखें
सब जग की रखवारी आँखें ।

✷

जंगल का राजा

चूहे के पीछे थी बिल्ली
कुत्ता भौंका बिल्ली पर
पूँछ दबा कर भागी बिल्ली
चल-चल बेटा दिल्ली चल
कुत्ते ने मुड़कर जा देखा
चला आ रहा था इक शेर
रुक जा रुक जा भौं-भौं कुत्ते
खाऊँ तुझे काहे की देर
तुम सब क्यों आज़ाद हो रहे
बजा रहे मेरा बाजा
पर यह बात भूल मत जाना
मैं हूँ जंगल का राजा ।

✷

दो तारे

ठुनक-ठुनक कर ठुन-ठुन ने
माँ को आवाज़ लगाई
ठुन-ठुन की आवाज़ सुनी तो
अम्मा दौड़ी आई
बड़े प्यार से बोली
क्या कहता आँखों का तारा
बोले ठुन-ठुन हमें चाहिए
एक चंदा एक तारा
सारे तारे टँगे हैं ऊपर
मेरे घर अँधियारा
चंदा तारा मिल जायें तो
जगमग हो घर सारा
गले लगा कर अम्मा ने
तब ठुन-ठुन को समझाया
बहुत दूर है चंदा मामा
और तारों की माया
मेरे घर में हैं दो तारे
इक बहना इक भैया
इन दो तारों पर न्यौछावर
रहती इनकी मैया ।

✷

तारे-तारे

टिम-टिम करते प्यारे तारे
हर रोज़ रात को आना तुम
मेरी खिड़की से झाँक-झाँक
मुझको आवाज़ लगाना तुम
मेरे प्यारे चंदा मामा की
बातें मुझे बताना तुम
कैसे लगते हैं क्या करते
यह सारी कथा सुनाना तुम
प्यारे तारे जब तक आना
परियों को भी लेकर आना
सब मिल कर नाचें गायेंगे
तब तुमं भी मेरे संग गाना
अब नींद मुझे आने वाली
तुम निंदिया की लोरी गाना
टिम-टिम करते प्यारे तारे
कल फिर तुम मेरे घर आना
शुभ रात्रि चला मैं सोने को
मेरे सपनों में आना तुम
टिम-टिम करते प्यारे तारे
हर रोज़ रात को आना तुम

✷

कुहू की भाषा

बैठ आम की डाली पर
कू-कू-कू-कू क्या गाती
कुहू-कुहू कर काली कोयल
किसको रोज़ बुलाती
दिन भर गाना गा-गाकर
इतना मीठा-मीठा गाना
किसको रोज़ सुनाती
पूछा बहुत बार मैंने
कू-कू-कू कुछ कह जाती
इसकी यह कू-कू की भाषा
मुझको समझ न आती
मैं तो इसके प्यार भरे
मीठे स्वर पर वारी जाती
कहाँ छुपा वह जिसको कोयल
रहती रोज़ बुलाती ।

✷

क़दम रुक न जायें

चला चल चला चल चला चल अकेला
ये दुनिया है मेना मगर तू अकेला
भरी भीड़ में तू पुकारेगा किसको
न कोई सुनेगा सुनायेगा किसको
उखड़ जायेंगे पाँव तेरे धरा से
जो पीछे से भीड़ का आयेगा रेला
न रुकना कहीं पथ पे बढ़ता चला जा
नई मंज़िलों पर तू चढ़ता चला जा
निगाहें सदा लक्ष्य पर तू चढ़ता चला जा
कभी मुड़ के पीछे नज़र से न तकना
कहीं कुछ कहे मन क़दम रुक न जायें
कंहीं छूट जाये न अवसर सुनहरा
हैं काँटे ही काँटे तेरे पथ में राही
मगर भाग्य पर रख भरोसा तू राही
अगर फेर लें मुख तेरे हमसफ़र भी
तुझे घेर लें ज़िन्दगी के कहर भी
रहेगा तेरा विश्वास ही साथ तेरे
न खुद को समझना कभी तू अकेला
चला चल चला चल चला चल अकेला

✷

चंद्रलोक की परी रानी

चंदा मामा की नगरी से आई एक परी रानी
गुड़िया रानी से मिल उसने उसे सुनाई कहानी
चंदा मामा ने भेजा है तुम्हें ढेर सा प्यार
मैं आई हूँ चंद्रलोक से अपने पंख पसार
चंदा मामा तुम्हें देखते हैं ऊपर से रोज़
आसमान से करते रहते हैं अपनों की खोज
कहा उन्होंने तुम ही उनकी सबसे प्यारी गुड़िया
उनके घर में काते चरखा जो देवी सी बुढ़िया
वो भी याद तुम्हें है करती
तुमने मिलने की ज़िद करती
भोली गुड़िया ने धीरे से हिला दिया सिर अपना
सिर हिलते ही टूट गया गुड़िया का प्यारा सपना
परी-परी कहते-कहते गुड़िया ने खोली आँखें
देखा उसने खड़ी सामने माँ फैलाकर बाहें

न उड़ जाना

चिड़िया रानी चिड़िया रानी
आओ पिलाऊँ तुमको पानी
लेकर आई हूँ दाना
रोज़ हमारे घर आना
बैठ पेड़ पर इतराना
फिर गाना मीठा गाना
चूँ-चूँ की आवाज़ लगाकर
सब सखियों को संग लाना
मेरे आँगन में कलरव कर
उत्सव वहाँ मना लेना
मैं खिलाऊँगी सबको खाना
तुम मुझको खुशियाँ देना
मैं बैठी लेकर दाना
भूल न जाना तुम आना
नई राह न मुड़ जाना
कहीं और न उड़ जाना

✷

छोटा सा बागीचा

मेरे घर के पास एक है छोटा सा बागीचा
माली ने उसके कण-कण को बड़े जतन से सींचा
आम नारियल केले काजू खड़े हैं आजू-बाजू
काली काका लगे हुए हैं किसको यहाँ सजा दूँ
इनके आगे बनी हुई है एक सड़क चहुँ ओर
जिन पर दौड़ लगाते रहते हम होते ही भोर
एक भाग में रंग-बिरंगे फूल हैं तरह-तरह के
बड़े प्रेम से उन्हें लगाया लाकर जगह-जगह से
लगे दूसरी ओर हुए हैं भाँति-भाँति के झूले
बच्चे जिन पर झूल-झूल कर सारी दुनिया भूले
व्यायामशाला के हिस्से में सभी करें व्यायाम
शक्ति बढ़ायें खुली हवा में आकर सुबह और शाम
मुझे गर्व है मेरे घर के पास है यह बागीचा
जिसको माली काका ने है बड़े प्रेम से सींचा ।

✷

धरती बने निराली

आओ काम करें कुछ ऐसे
जिनसे जग में हो खुशहाली
हरी भरी धरती बन जाये
मन के अन्दर हो हरियाली
सबसे पहले जले हृदय में
देशप्रेम की पावन ज्वाला
भारत माँ के बेटे हैं हम
इस धरती ने हमको पाला
भारत माँ के बेटे हम सब
फिर कैसा यह भेदभाव है
क्यों हम सबके मन के अन्दर
स्नेह एकता का अभाव है
ऊँच-नीच निर्धन धनवाला
ज़ात-पात के भेद छोड़ दो
मानव हो तो दिल दिमाग को
मानवता की ओर मोड़ दो
एक ईश है सबके दिल में
किसी नाम से उसे पुकारो
फिर क्यों लड़ें धर्म के पीछे
अपने मन में ज़रा विचारो
एक आत्मा सबके भीतर
सबमें एक खून की लाली
फिर क्यों काम करें हम ऐसे
जिनसे हो जाये बदहाली
खुश हो घर परिवार देश सब
अपनी धरती बने निराली
आओ काम करें कुछ ऐसे
जिनसे जग में हो खुशहाली।

✷

शीत लहर की करो विदाई

जाड़ा बीता गरमी आई
निकली चादर गई रज़ाई
सर-सर-सर-सर भागी सर्दी
पहने स्वेटर कोट की वर्दी
साथ ले गई टोपे मफलर
कंबल गद्दे और रज़ाई
काजू मेवे मूँगफली
भागे छुपकर गली-गली
शरबत कुल्फी बर्फ के गोले
आईसक्रीम के बम-बम भोले
पंखे कूलर ए.सी. सबने
अब घर-घर में धूम मचाई
धुंध-अँधेरा कुहूर घनेरा
बदला सबका रैन बसेरा
अब तो हमको नहीं चाहिए
गरम अंगीठी और दुशाला
धूप की चादर ओढ़ के सबने
शीत लहर की करी विदाई
कट-कट दाँत नहीं अब बजते
हल्के-हल्के कपड़े सजते
भाग गई ठंडक कटखन्नी
बाग में खेलें मुन्ना-मुन्नी
भैया छत पर खुली हवा में
बैठे जम कर करें पढ़ाई ।

✷

खून का रिश्ता

आओ सब मिलकर आ जाओ
दुनिया नई बनानी है
नये समय की नई चाल की
लिखनी नई कहानी है
क्या पतले सिकुड़े क्या मोटे
क्या लम्बे वाले क्या छोटे
क्या निर्धन या दौलत वाले
क्या गुमनाम या शोहरत वाले
क्या शेरों जैसे दिल वाले
या डर-डर कर जीने वाले
क्या गोरे क्या काले भाई
सब मिलकर बैठेंगे भाई
एक कसम खानी है सबको
देश बचाकर रखना हमको
अलग सभी की चाल-ढाल है
यह तो सबको दिखता भाई
खून सभी का लाल-लाल है
सबको यही बता दो भाई
कोई डाले फूट हमारे बीच
नहीं हो सकता भाई
रंग खून का लाल हमारे बीच
खून का रिश्ता भाई
धर्म जाति के बंधन तोड़ो
ऊँच-नीच की बातें छोड़ो
मैं और तू का भेद मिटाकर
सबसे अपना नाता जोड़ो
लड़ना और झगड़ना सबसे
यह तो बात पुरानी है ।

✷

मकर संक्रान्ति का त्यौहार

नील गगन में दूर–दूर तक
उड़ें पतंग हज़ार
आज संक्रान्ति का त्यौहार
मकर संक्रान्ति का त्यौहार

नीली पीली हरी पतंगें
उड़ती नील गगन में
देख–देख कर बूढ़े बच्चे
कितने आज मगन हैं
ये काटा और वो काटा की
चारों तरफ पुकार
आज संक्रान्ति का त्यौहार

ढील करी तो उड़ीं पतंगे
नील गगन में ऊँची
देखा कोई पेंच लड़ायें
झटपट डोरी खींची
जिसकी बची पतंग है भैया
उसकी जय जयकार
आज संक्रान्ति का त्यौहार

रंग बिरंगी गुब्बारे सी
आसमान में उड़तीं
पाई ढील ज़रा सी तो
सूरज छूने को बढ़ती
खेल रही है छुप्पा-छुप्पी
बादल के उस पार
आज संक्रान्ति का त्यौहार

रखकर ढेर एक खिचड़ी का
बाँट रही माँ खिचड़ी
खाने में भी आज बन रही
गरम गरम है खिचड़ी
तिल के लड्डू बना रही माँ
भर-भर मीठा प्यार
आज संक्रान्ति का त्यौहार
मकर संक्रान्ति का त्यौहार

✷

नानी आई

उस दिन मेरी नानी आई
मैंने जमकर करी लड़ाई
मम्मी उनको कहती मम्मी
वो मम्मी को कहती बेटी
मेरी मम्मी, मेरी मम्मी
मैं अपनी मम्मी की बेटी
बीच कहाँ से नानी आई
मैंने जमकर करी लड़ाई

करती बड़े अनोखे काम
लेती हैं मम्मी का नाम
मैंने कहा पुकारो मम्मी
हँस देती हैं ले कर चुम्मी

दादी से जा कथा सुनाई
दादी जी भी कुछ मुकाई
फिर पापा को हाल सुनाया
अपना गुस्सा उन्हें दिखाया
पापा ने कहकहा लगाया
बोले बात सीरियस भाई
मैंने जमकर करी लड़ाई

लगी कचहरी फिर आँगन में
बैठे सब अपने आसन पे
माँ ने मुझको पास बुलाया
किया प्यार और गले लगाया
बोलीं देखो ये हैं दादी
ये तेरे पापा की मम्मी
वैसे ही ये मेरी माँ हैं
मैं इनको कहती हूँ मम्मी
जैसे तू है मेरी बेटी
वैसे मैं हूँ इनकी बेटी

आँख बन्द कर मैंने सोचा
बात ज़रा उल्टी लगती है
पर लगती इसमें सच्चाई
बजा तालियाँ मैं चिल्लाई
नानी आई, नानी आई
सुन्दर-सुन्दर कपड़े लाई
ढेर टॉफ़ियाँ और मिठाई
मेरी प्यारी नानी आई ।

✷

नये युग की सर्जना

शस्य श्यामल मातृ भू को सिर झुकायें
आ गया वक्त अब हम जाग जायें

वक्त के धोखे न अब आकर सतायें
अब कोई जयचंद न फिर सिर उठायें

सब विवादों को भुला दें दिल से अपने
सुख समृद्धि शाँति के पूरे हों सपने

ज़ाति भाषा धर्म की भाई नई हो
एक मानवता की परिभाषा नई हो

हृदय से बस एक ही आवाज़ आए
मातृ भू की शान में हम जाँ लुटायें

कोई हिन्दू सिक्ख मुस्लिम न इसाई
भारती के पुत्र सब हैं भाई-भाई

हम रहें मिलकर चलें मिलकर खुशी के गीत गायें
प्रेम की सम्मान की भाषा पढ़ें सबको पढ़ायें

एक ही धरती गगन है एक ही सब एक हैं हम
उच्च आदर्श ऊँची भावनाएँ नेक हैं हम

हम धरा के पुत्र दुनिया को दिखा दें
विविधता में एकता सबको सिखा दें

वक़्त की आवाज़ है बढ़ते रहें हम
मातृ भू की वंदना करते रहें हम

सफ़लता की सीढ़ियाँ चढ़ते रहें हम
नये युग की सर्जना करते रहें हम ।

✷

शहीदों की ख़ातिर

न्यौछावर कर दिये प्राण
आज़ादी के परवानों ने
फाँसी का फंदा चूम लिया
आज़ादी के दीवानों ने
गोली खाकर भी सीने पर
झुकने न दिया अपने ध्वज को
कट शीश धरा पर गिरा मगर
छू रहा तिरंगा अम्बर को
जेलों में जीवन काट दिये
भारत माता के वीरों ने
होकर शहीद तज दिये प्राण
कारागृह की प्राचीरों में
पर आज हुआ कैसा अनर्थ
ईमान धर्म सब भूल गये
आँखों में दिल में स्वार्थ लिये
हम नैतिकता को भूल गये
होकर स्वतन्त्र उन पुरखों के
बलिदानों को हम भूल गये
जो इस स्वतंत्रता की खातिर
फाँसी फंदों पर झूल गये
उन वीर शहीदों की ख़ातिर
यह व्रत हमको लेना होगा
तन में ये प्राण रहें न रहें
ध्वज भारत का ऊँचा होगा ।

✷

छोटा राजकुमार

मेरी प्यारी गुड़िया रानी
आओ सुनाऊँ तुम्हें कहानी
एक था राजा एक थी रानी
दादी से थी सुनी कहानी
राजा की रानी थी अच्छी
उनकी थी छोटी सी बच्ची
हुआ एक दिन बड़ा अनोखा
राजा और रानी से धोखा
दूर कहीं से आई बुढ़िया
चुरा ले गई उनकी गुड़िया
लगे ढूँढने राजा रानी
अपनी प्यारी गुड़िया रानी
फिर आया छोटा जादूगर
ले आया गुड़िया को ढूँढकर
खुश था राजा खुश थी रानी
खुश थी उनकी गुड़िया रानी
छोटा जादूगर सुकुमार
वो था उनका राजकुमार
जो बचपन में खोया था
एक दिवस जब सोया था
उसे चुराया जादूगर ने
बंद किया था अपने घर में
तोड़ के जादू जादूगर का
लौट के आया राजकुँवर था
मिलकर दोनों बहना भैया
नाचें ता-ता थैया-थैया ।

✷

मेरी छोटी सी बगिया

मेरी छोटी सी बगिया में भाँति-भाँति के फूल महकते
रोज़ सुबह होते ही पक्षी मधुर स्वरों में वहाँ चहकते

रंग-बिरंगी तितली उड़कर फूल-फूल पर बैठ रही है
बैठ आम पर कू-कू करती कोयल खुद पर ऐंठ रही है

उसके मीठे स्वर को सुनकर न्यौछावर उस पर सब होते
साथ आम की मधुर गन्ध से अन्दर बाहर सभी महकते

पेड़-पेड़ पर पात-पात पर सर-सर-सर-सर हवा चल रही
रंग-बिरंगे फूलों को छू झूम-झूम कर उछल मचल रही

पीपल बरगद नीम आम के वृक्ष पंक्ति में खड़े हुए हैं
रात में उन पर चमकें जुगनू जैसे हीरे जड़े हुए हैं

केला नारियल और सुपारी खड़े हैं सीधे अपनी धुन में
मेरा बाग गूँजता रहता भौरों की मीठी गुन-गुन में

फल-फूलों से लदे हुए हैं सभी पेड़ पौधे बगिया के
मेरे सारे मित्र हैं रहते दीवाने मेरी बगिया के

✷

चमके सूरज दादा

सुबह सवेरे आसमान में चमके सूरज दादा
सबको बाँटी धूप रोशनी किसी को कम न ज़्यादा

वन उपवन और नदी समन्दर दादा सबमें चमके
पेड़ झाड़ और फूल पात सब रंग बिरंगे दमके

ऊँचे पर्वत नीची घाटी सबमें जायें दादा
सबको बाँटें धूप रोशनी किसी को कम न ज़्यादा

कीट पतंगे पशु पक्षी मानव सबको दें जीवन
सूरज से ही जीवित है सारी सृष्टि का कण-कण

सबको भोजन स्वास्थ्य मिलेगा यह सूरज का वादा
सब पर रखते कृपा एक सी किसी पे कम न ज़्यादा

सुबह सवेरे आकर दादा हमको रोज़ जगाते
हुआ सवेरा काम करो अब आकर हमें बताते

गया अँधेरा नया उजाला लाये सूरज दादा
आशाओं की किरण बाँटने आये सूरज दादा

✷

रानी गई जंगल

एक थी छोटी गुड़िया रानी
दादी के घर जाती थी
ठुमक-ठुमक कर चली जा रही
मीठा गाना गाती थी
राह में इक जंगल पड़ता था
रानी गई बीच जंगल
वहाँ पे भालू शेर और चीता
मना रहे उत्सव मंगल
तीनों बोले गुड़िया रानी
हम तो तुमको खायेंगे
खाकर तुमने गायेंगे
खाकर तुमको हम जंगल में
पिकनिक खूब मनायेंगे
रानी बोली अरे साथियों
खा लेना जल्दी भी क्या
दादी के घर से खा-खाकर
आऊँगी मैं मोटी होकर
तब तुम मुझको खा लेना
पूरा स्वाद मज़ा लेना
दादी को सब बात बताई
दादी ने की अति चतुराई

उसे ढोल में बंद किया
और जंगल में भेज दिया
तीनों ने जब देखा ढोल
समझ न पाये ढोल की पोल
ज़ोर से ढोल को लात जमाई
बोले गुड़िया तो नहीं आई
पड़ी लात तो भागा ढोल
लुढ़क पड़ा वो गोलमगोल
जाकर गुड़िया के घर पहुँचा
नाची गुड़िया चा-चा-चा-चा ।

✷

विज्ञान की बातें करें

आओ हम कुछ ज्ञान की विज्ञान की बातें करें
प्रकृति के वरदान की इन्सान की बातें करें

ज़िन्दगी की हर खुशी में विज्ञान का ही हाथ है
हर जगह हर चीज़ में विज्ञान सबके साथ है
घर की हर इक चीज़ में विज्ञान का जल्वा दिखे
धरती जल और आस्माँ सबमें हमें वो ही दिखे
आओ हम विज्ञान के गुणगान का बातें करें

टी.वी. फ्रिज वाशिंग मशीनें चीज़ें कितने काम की
बिजली पंखे प्रेस कुकर हैं सभी आराम की
कार गाड़ी और जहाज़ों में सफर करते हैं हम
घंटों के सब काम अब मिनटों में कर लेते हैं हम
हैं बनाईं जिसने उस इन्सान की बातें करें

जो संदेशा भेजना चाहो तो चिट्ठी तार है
फोन के तो साथ भैया मुझको कितना प्यार है
जो भी चाहो कर लो बातें काम की व्यापार की
इसकी बातें उसकी बातें घर की और संसार की
दूर बैठे पर कैसी शान से बातें करें
चाँद पर पहुँचे हुए इन्सान की बातें करें

हर बीमारी के लिए उपचार ढूँढे जा रहे
डॉक्टर इन्सान का कल्याण करते जा रहे
टी.वी. चेचक और मलेरिया दूर की बातें बनीं
पोलियो को है भगाना बात हमने ठान ली
मौत से टकरायें उस विज्ञान की बातें करें
आओ हम कुछ ज्ञान की विज्ञान की बातें करें

✷

हमें न बाँटो

हम भारत में रहने वाले, इक दूजे के सहारे हैं
यही हमारे मंदिर, मस्जिद, गिरजे और गुरूद्वारे हैं

हममें फूट न डालो भैया, धर्म जाति के नारों से
हम तो जुड़े हुए आपस में, आपस के त्यौहारों से

ऊँच-नीच या छुआछूत को, लाते नहीं विचारों में
इसीलिए लहराये तिरंगा, धरती, चाँद, सितारों में

खून सभी का एक रंग का, हम सब हैं भाई-भाई
मिलकर जो संघर्ष किया था, उससे आज़ादी पाई

हमें न बाँटों हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख और इसाई में
धर्म हमारे घर के अन्दर, बाहर भाई-भाई है

धर्म नहीं सिखलाता हमको, आपस में लड़ना मरना
ज़ात-पात के भेदभाव को दूर हमें अब है करना

संग चलें हम, संग हँसें हम, संग-संग खायें पीयें
रहें प्रेम से, बसें प्रेम से, संग-संग ही हम जीयें

एक हमारी धरती माता, एक हमारा है आकाश
एक हमारी हृदय तान है, एक हमारा है विश्वास

रंग-रंग के फूल खिले हैं, नित-नित नई बहारें हैं
हम भारत में रहने वाले, इक-दूजे के सहारे हैं

✷

अपना घर

सबसे अच्छा अपना घर है , कभी सुना था बचपन में
अटल सत्य था हमने जाना , आ पहुँचे जब पचपन में

पापा से कहते थे 'पापा मामा के घर जायेंगे'
आम करौंदे जामुन केले तोड़-तोड़कर खायेंगे
मामा का घर दूर गाँव में दूध मलाई का भंडार
खूब बनायेंगे हम सेहत खाकर चीज़ें बारम्बार

देख शून्य में पापा कहते 'बेटी अब खेलो जाकर
सबसे अच्छी अपनी रोटी, सबसे अच्छा अपना घर'

आज कहा मेरी बेटी ने 'मम्मी चलो किसी के घर
चाचा के या मामा के या फिर ताऊ-ताई के घर
सारे बच्चे मिलकर घर में धक्कमपेल मचायेंगे
खेल-खेल कर थक जायेंगे तब जाकर सो जायेंगे

पापा जैसे देख शून्य में मैं बोली 'जा बेटा जा
काम बहुत करने हैं मुझको भैया को तू ज़रा बुला
काम बहुत करने हैं अपने घर में अभी करेंगे सब मिलकर
नहीं किसी के घर है जाना सबसे अच्छा अपना घर'

यह घर ही है स्वर्ग हमारा क्या रखा है भटकन में
सबसे अच्छा अपना घर है कभी सुना था बचपन में

✷

मानवशक्ति

तू सर्वशक्ति का पुञ्ज अरे मानव है सब तेरे वश में

तू खोद गिरा, कन्दर, पहाड़, तू काट गिरा चट्टानों को
तू कर दे जंगल में मंगल मुखरित कर दे वीरानों को

तू बाँध बना सरिताओं पर, सोपान बना धरणीधर पर
प्रभु ने सिरजा था एक सेतु, शत सेतु बना रत्नाकर पर

दिनकर की ऊष्मा बंदीकर, अपने कर की ज़ंजीरों में
कर वह प्रचण्ड शक्ति वश में, जो नहीं तोप या तीरों में

फिर अग्निदेव को दास बना फौलाद ढाल हथियार बना
कर दें क्षण में अरि का खण्डन, तू वज्र सहश शस्त्रास्त्र बना

अपने भुजदण्डों के बल पर नदियों से मनमाना जल ले
ऊसर बंजर न रहे कहीं, ले अरे हाथ में हल ले ले

इस शस्य श्यामला धरती पर, जब जब नव अंकुर आयेंगे
भारत के बेटे थिरक-थिरक नाचें, गाये, मुस्कायेंगे

पनघट की रानी नाचेगी, खेतों के राजा गायेंगे
मरघट में जीवन जागेगा, जब विजयी वीर हुँकारेंगे

निशि दिवस परिश्रम करने पर युग चरण सफलता चूमेगी
जन–जन जनगणमन गायेगा सृष्टि रसमय हो झूमेगी

तेरी प्रगति को देख–देख सुरदेव ठगे रह जायेंगे
हैं इन्द्र वरुण कुछ नहीं इरे इक ओर खड़े रह जायेंगे

जल–थल–नभ अन्तरिक्ष पथ को तू अपनी मुट्ठी में धर ले
तू नहीं भाग्य का दास अरे, सौभाग्य भाग्य तेरे वश में
तू सर्वशक्ति का पुञ्ज अरे मानव है सब तेरे वश में

छोटा सा गुलाब

मैं इक छोटा सा गुलाब
मैं टँगा कँटीली डालों पर
फिर भी मानव ने दिया मान
है मुझे सजाया बालों पर
कभी पहनता बड़े जतन से
मुझे गले का हार बनाकर
कभी भेंट करता प्रेमी को
मधुर प्यार की डोर बना
कभी बड़े आदर से मुझको
वी.आई.पी. के हाथ थमाता
कभी कोट का काज सजाकर
छाती पर है मुझे झुलाता
लेकिन मेरा मन बंजारा
चाहे कहीं और ही जाना
वह तो चाहे सीमाओं के
प्रहरी के पथ में बिछ जाना

✷

दादी आई

दादी आई, दादी आई
आ हा मेरी दादी आई
ढेर खिलौने लेकर आई
देखो मेरी दादी आई
गुड्डा-गुड़िया
बुढ्ढा-बुढ़िया
लकड़ी का घोड़ा
घोड़े का कोड़ा
रानी-राजा
ढम-ढम-बाजा
झमक झुनझुना
काली ऐनक
असली जैसा
लाई मेंढक
फल मेवा और ढेर मिठाई
लेकर मेरी दादी आई

✷

रंग रंगीली होली

होली आई होली आई
रंग-बिरंगी होली आई
नीले-पीले रंगों वाली
रंग-रंगीली होली आई
रंग लगाया पानी डाला
गीली-गीली होली आई
मीठी-मीठी गुझियों वाली
बड़ी रसीली होली आई
नाचें गायें झूम-झूम सब
खिली-खिली सी होली आई
गले मिल रहे सभी प्रेम से
हिली-मिली सी होली आई

✷

सतरंगा गोला

तरह-तरह के रंगों वाला
इन्द्रधनुष सतरंगा आया
आसमान में कितना प्यारा
रंग-बिरंगा द्वार बनाया
नज़रें दूर-दूर तक जाकर
ढूँढ रहीं इसके कोनों को
अगर मुझे मिल जायें तो मैं
जोड़ के रख दूँ उन दोनों को
बनेगा वह सतरंगा गोला
चमकीला सा प्यारा-प्यारा
धनुष बाण आकृति बदल कर
बनेगा इक सतरंगा तारा
मुझको बड़ा अचम्भा होता
कहाँ से यह आता है
क्या परियों का राजा अपना
धनुष चलाता है
या फिर यह होता है शायद
परियों की रानी का झूला
लटक रहा है आसमान में
जिसे देख मैं सबकुछ भूला ।

✷